शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
वर्ष: 3, अंक:4; जनवरी-जून, 2022
पृष्ठ संख्या : 63-73

आधुनिक हिंदी काव्य में राम

✍ पूजा बरुवा

शोध-सार :

भारतीय सभ्यता-संस्कृति, साहित्य तथा धर्म ग्रंथों में राम एक ऐसे पात्र हैं, जो हमेशा से ही मानव जीवन के निकट रहे हैं , मनुष्य के लिए अनुकरणीय रहे हैं, जो अत्यंत ही प्रासंगिक एवं महत्त्वपूर्ण हैं। रामकथा का इतिहास बहुत पुराना है। महर्षि वाल्मीकिकृत 'रामायण' में राजा राम क्षत्रिय धर्म और औदात्यपूर्ण संस्कृति के वाहक हैं, तो तुलसीदासकृत 'रामचरितमानस' के राम मर्यादा पुरूषोत्तम हैं। पर इस क्षेत्र में आधुनिक युगीन कवि निराला की कविता 'राम की शक्तिपूजा' और नरेश मेहता का खंडकाव्य 'संशय की एक रात' के राम भिन्न हैं। इन दोनों काव्य में दोनों कवियों ने राम नाम को तो उद्धृत किया है, पर नवीन रूप मे; क्योंकि ये राम अवतारी राम नहीं, बल्कि अपने समय के साधारण मानव हैं, जो अपने समय की परिस्तिथियों से अवसाद ग्रस्त हैं। युगीन राजनैतिक, सामाजिक और मानसिक स्थितियों की अभिव्यक्ति के लिए निराला और नरेश मेहता ने पुराण एवं इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाओं एवं मार्मिक प्रसंगों को आधार बनाकर 'राम की शक्तिपूजा' और 'संशय की एक रात' में आदर्श पुरुष, शील, शक्ति, सौंदर्य आदि गुणों से युक्त श्रीराम के मिथक में सामान्य जन की प्रश्नाकुलता, हताशा, उदासी, निराशा, युद्ध के प्रति संशयग्रस्त मन और युद्ध की विभीषिका से भयभीत, द्वन्द्वग्रस्त स्थिति तथा संवेदनशीलता को दिखाया है। अपनी इसी विशेषता के कारण आधुनिक युगीन ये दो काव्य एक ओर जहाँ सामान्य जन के साथ तादात्म्य स्थापित करने में सफल हुए हैं ,वही दूसरी ओर युगानुरूप परिस्थितियों में प्रासंगिक भी बन पड़े हैं।

बीज शब्द : राम, मिथक, लघु मानव,प्रासंगिकता।

प्रस्तावना :

रामकथा का इतिहास बहुत पुराना है। सबसे पहले वाल्मीकि ने 'रामायण' की रचना की थी और उसके बाद रामकथा की जैसे बाढ़ सी आ गयी। हिंदी साहित्य के मध्यकाल में रामकेंद्रिक अनेक

रचनाएँ लिखी गयी थीं। आधुनिक काल तक आते-आते रामकाव्य लिखने की परंपरा लगभग समाप्त हो गई थी; पर राम की प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई। राम एक सनातन पुरुष हैं, जो हर युग में महत्त्वपूर्ण हैं। आधुनिक काल में पौराणिक पात्रों को लेकर मिथकीय रचना लिखने की एक परंपरा चली। मैथिलीचरण गुप्त कृत 'साकेत', अयोध्यासिंह उपाध्याय कृत 'वैदही वनवास', निरालाकृत 'राम की शक्ति-पूजा' और नरेश मेहताकृत 'संशय की एक रात' इसी परंपरा की रचनाएँ हैं। 'साकेत' और 'वैदही वनवास' में राम का परम्परागत रूप में ही चित्रण हुआ है, लेकिन 'राम की शक्ति-पूजा' और 'संशय की एक रात' में राम मर्यादापुरुषोत्तम प्रबल प्रतापी भगवान न होकर एक सामान्य मानव हैं, जिसके माध्यम से दोनों कवियों ने राम को आधुनिक संदर्भ से जोड़ा है। आधुनिक काव्य में राम युगीन समस्याओं को अभिव्यक्ति देने के माध्यम मात्र हैं।

अध्ययन की पद्धति :

राम विषयक अध्ययन हमेशा से ही महत्त्वपूर्ण रहा है। आधुनिक हिंदी काव्य में राम किस रूप में चित्रित हुए हैं, इसका अध्ययन करना अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य है- आधुनिक काव्य में राम के स्वरूप का उद्घाटन करना। 'राम की शक्ति पूजा' (1936) और 'संशय की एक रात' (1962) काव्य में किस रूप में उनका चित्रण हुआ है, उन सभी का अध्ययन यहाँ किया गया है। प्रस्तुत पत्र के अध्ययन की पद्धति विश्लेषणात्मक है।

विश्लेषण :

महर्षि वाल्मीकिकृत 'रामायण' में राजा राम क्षत्रिय धर्म और औदात्यपूर्ण संस्कृति के वाहक हैं, तो तुलसीदासकृत 'रामचरितमानस' के राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। पर इस क्षेत्र में आधुनिक युगीन कवि निराला की कविता 'राम की शक्ति-पूजा' और नरेश मेहता का खंडकाव्य 'संशय की एक रात' के राम भिन्न हैं। इन दोनों काव्य में दोनों कवियों ने राम नाम को तो उद्धृत किया है, पर नवीन रूप में; क्योंकि ये राम अवतारी राम नहीं, बल्कि अपने समय के साधारण मानव हैं, जो अपने समय की परिस्तिथियों से अवसाद ग्रस्त हैं। युगीन राजनैतिक, सामाजिक और मानसिक स्थितियों की अभिव्यक्ति के लिए निराला और नरेश मेहता ने पुराण एवं इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाओं एवं मार्मिक प्रसंगों को आधार बनाकर 'राम की शक्ति-पूजा' और 'संशय की एक रात' में आदर्श पुरुष, शील, शक्ति, सौंदर्य आदि गुणों से युक्त श्रीराम के मिथक में सामान्य जन की प्रश्नाकुलता, हताशा, उदासी, निराशा, युद्ध के प्रति संशयग्रस्त मन और युद्ध की विभीषिका से

भयभीत, द्वन्द्वग्रस्त स्थिति तथा संवेदनशीलता को दिखाया है। दोनों रचनाओं में राम के चरित्र के नये रूप सामने आते हैं।

संशयग्रस्तता :

काव्य तथा आख्यानों में राम को चाहे मानव रूप में दिखाया गया हो या फिर ईश्वर रूप में, दोनों ही स्थितियों में कभी भी राम को शंकित, भयभीत या उद्विग्न नहीं दिखाया गया है। राम हमेशा से ही सबके लिए प्रोत्साहन तथा प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। लेकिन आधुनिक काव्य में राम का स्वरूप परंपरा से भिन्न है। यहाँ सामान्य मानव की भाँति राम युद्ध के परिणाम के प्रति संशयग्रस्त तथा चिंतित हैं। उनके मन में आत्मविश्वास से अधिक संशय है, जो युगीन परिस्थितियों को उभारने में सक्षम हुए हैं। 'संशय की एक रात' में राम स्वयं युद्ध के परिणाम को लेकर संशयग्रस्त हैं। अपने संशय को व्यक्त करते हुए राम कहते हैं –

यदि मैं मात्र कर्म हूँ
तो यह कर्म का संशय है।
यदि में मात्र क्षण हूँ
तो यह क्षण का संशय है
यदि मैं मात्र घटना हूँ
तो यह घटना का संशय है
पर यह संशय है
संशय है
संशय है। (मेहता 2012:52-53)

'राम की शक्ति-पूजा' निराला के साहित्य की एक उत्कृष्ट उपलब्धि है। इसमें निराला ने रामकथा के माध्यम से धर्म और अधर्म के शाश्वत संघर्ष का चित्रण किया है। राम धर्म का प्रतीक है और रावण अधर्म का। रामकथाओं में हमेशा से ही अधर्म पर धर्म की जीत दिखायी गयी है, लेकिन प्रस्तुत कविता में अधर्मी रावण का चित्रण एक विराट शक्ति के रूप में किया गया है, जिसके समक्ष एकबार के लिए तो राम भी कमजोर पड़ गये थे। यह कविता राम के मानवीय स्वरूप के संशय का चित्रिण करता है। राम जो रावण जैसे पराक्रमी योद्धा से युद्ध करने के लिए कभी भी नहीं डरे, वही राम आज भयभीत है, चिंतित हैं, शंकित हैं -

स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा फिर-फिर संशय,
रह-रह उठता जग जीवन में रावण-जय-भय;
जो नहीं हुआ आज तक हृदय रिपु-दम्य-श्रांत,-
एक भी, अयुत-लक्ष्य में रहा जो दुराक्रांत,
कल लड़ने को हो रहा विकल वह बार-बार,

असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार-हार । (निराला 2015:43)

राम का संशय व्यक्ति का नहीं, बल्कि समष्टि का है। नरेश मेहता राम को पौराणिक मिथकों के स्थान पर समकालीन सन्दर्भों से जोड़ते हैं।

हताशा से पीड़ित :

राम संबंधी आख्यानों में राम सदा प्रबल-प्रतापी वीर योद्धा के रूप में चित्रित हुए हैं; पर आधुनिक काव्य में राम को हताश, निराश, भयभीत तथा चिंतित रूप में चित्रित किया है। कहीं-कहीं तो राम रोते हुए भी नजर आये हैं। आधुनिक काव्य में राम के इस स्वरूप के माध्यम से सामान्य जन की पीड़ा, उदासीनता, हताशा, निराशा आदि की ही अभिव्यक्ति हुई है। 'राम की शक्तिपूजा' कविता में राम सीता के साथ व्यतीत किये गये पलों को याद कर मुस्कुराते हैं, लेकिन दूसरे ही क्षण कठोर वास्तविकता से तकड़ाकर उनकी वे स्मृतियाँ चूर-चूर हो जाती है। इस महायुद्ध में महाशक्ति स्वयं रावण की रक्षा कर रही थी। महाशक्ति के विराट रूप में राम के समस्त दिव्यास्त्र विलीन हो रहे थे। अपनी हार तथा सीता का उद्धार न कर पाने की आशंका से व्याकुल राम के नेत्रों से मोती के समान आँसू की दो बून्दें गिर पड़ती हैं-

ज्योतिर्मय अस्त्र सकल बुझ बुझ कर हुए क्षीण,
पा महामिलन उस तन में क्षण में हुए लीन;
लख शंकाकुल हो गये अतुल बल शेष शयन,
खिंच गये दृगों में सीता के राममय नयन;
फिर सुना हँस रहा अट्टाहास रावण खलखल,
भावित नयनों से सजल गिरे दो मुक्तादल। (निराला 2015:44)

राम जैसे परम शक्तिशाली पुरुष को असहाय दिखाकर आधुनिक कवियों ने समकालीन समाज में जनसाधारण की विडम्बना को दर्शाया है, जो युगीन परिस्थितियों से पीड़ित होकर हार चुके हैं । 'राम की शक्ति-पूजा' में निराला ने राम के निराशा भरे स्वरूप का मार्मिक चित्रण किया है-

धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध !
जानकी ! हाय, उद्धार प्रिया का न हो सका । (निराला2015:52)

द्वन्द्वग्रस्तता :

राम काव्य की परंपरा में राम को हमेशा आत्मविश्वास से युक्त दर्शाया गया है। वे शील, धैर्य, सूझ-बुझ के प्रतीक रहे हैं। 'रामायण', 'रामचरितमानस' तथा अन्य राम आख्यानों में कभी भी उन्हें द्वन्द्वग्रस्त नहीं दिखाया गया। सीता का उद्धार तथा रावण से युद्ध के संबंध में उन्होंने जो निर्णय लिया उसमें वे अटल रहें; पर आधुनिक राम में यह निश्चयता नहीं देखने को मिलती। सीता के उद्धार को

लेकर किये गये युद्ध के संबंध में आधुनिक राम के मन में द्वंद्व उत्पन्न होता है। युद्ध और शांति की समस्या को लेकर वे द्वंद्व में उलझ चुके हैं। वे कहते हैं -

लक्ष्मण !
राम की इस विवशता को
सोच सकते हो ?
अन्य प्रायश्चित करें मेरे लिए,
दुःख भोगें,
वनों में भटके अकारण ही
बिना वनवास की आज्ञा मिले।
पिता की मृत्यु
विधवा जननियाँ
कौन है इसका निमित्त?

'संशय की एक रात' में राम का आत्मसंशय बाह्य संघर्ष यानी युद्ध का कारण है। एक ओर वे सीता के उद्धार के लिए युद्ध करना चाहते हैं; पर दूसरी ओर वे सीता के उद्धार को नितांत व्यक्तिगत समस्या समझते हैं। वे सीता के उद्धार के लिए किये गये युद्ध को जनविनाश का कारण नहीं बनाना चाहते। अपने व्यक्तिगत समस्या के समाधान हेतु वे सम्पूर्ण मानव जाति का नाश नहीं कर सकते। राम के द्वन्द्वग्रस्त स्थिति का प्रमाण सर्वाधिक तब मिलता है, जब वे अपने पिता की छाया से वार्तालाप करते हैं। राम पिता की छाया के सामने अपना द्वंद्व व्यक्त करते हैं और युद्ध की सार्थकता तथा शांति की प्रतिष्ठा के संबंध में क्या उचित है और क्या अनुचित यह निश्चित नहीं कर पाते। युद्ध और शान्ति में से वे किसका चुनाव करें इसका समाधान वे खोजने लगते हैं। पिता की छाया राम को युद्ध की सार्थकता समझाती है; पर राम का मन द्वंद्व से निकल नहीं पाता। राम का द्वंद्व उनके संशयग्रस्त मन के कारण बढ़ता ही जाता है। यहाँ पर ही राम का आत्मसंशय आत्मसंघर्ष बन जाता है। वे हनुमान से कहते हैं-

हनुमत वीर !
युद्ध की अनिवार्यता को जानता हूँ
अपने से अधिक
इन पृथुज्जन को मानता भी हूँ
किन्तु
इस युद्ध के उपरांत
होगी शांति
इसका तो नहीं विश्वास।
बंधु !
यह युद्ध
संभव है अनागत युद्ध का कारण बने। (मेहता2012:64)

अपने अन्तर्द्वन्द्व के कारण राम संशय से ग्रसित हैं तथा युद्ध में होनेवाले विनाश का उत्तरदायी वे स्वयं को समझते हैं ।

युद्ध विरोधी :

युद्ध हर युग की प्रमुख समस्या है। युद्ध से किसी का भला नहीं हो सकता। 'राम की शक्तिपूजा' और 'संशय की एक रात' जैसे आधुनिक काव्यों में कवियों ने राम के माध्यम से युद्ध एवं शांति जैसी महत्त्वपूर्ण समस्या को उठाया है । यहाँ राम युद्ध-विरोधी के रूप में उभरकर आये हैं। वे युद्ध की जय-पराजय से भयभीत नहीं हैं, उन्हें इस बात की चिंता है कि युद्ध से क्या शांति स्थापित हो पायेगी। साथ ही युद्ध की विभीषिका से राम का संवेदनशील मन चित्कार कर उठता है। राम युद्ध से डरते नहीं, बल्कि सच तो यह है कि उन्हें युद्ध प्रिय नहीं। मानवता की हत्या कर युद्ध से शांति स्थापना की कामना वे नहीं करते। युद्ध का विरोध करते हुए वे कहते हैं -

लक्ष्मण!
मैं नहीं हूँ कापुरूष
युद्ध मेरी नहीं है कुंठा
पर युद्धप्रिय भी नहीं ।
बंधु ! (मेहता 2012:28)

राम युद्ध की विभीषिका को जानते हैं और इसीलिए वे समस्त संसार को युद्ध से बचाना चाहते हैं -

मैं केवल युद्ध को बचाना चाहता रहा हूँ बंधु !
मानव में श्रेष्ठ जो विराजा है
उसको ही
हाँ, उसको ही जगाना चाहता रहा हूँ बंधु !
क्या यह संभव है ?
क्या यह नहीं है ? (मेहता 2012:27)

डॉ. कमला प्रसाद पाण्डेय ने 'छायावादोत्तर हिन्दी काव्य की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि' में अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है-

> अन्तत: राम सामूहिक के पर्याय होते हैं तथा अपने विवेक से प्रश्न न उठाने का परामर्श देते हैं। यहाँ राम स्वातंत्र्य के अभिलाषी हैं, पर उस प्रकार का समाज ही नहीं है। यहीं कवि का मनोवैज्ञानिक स है और आधुनिकता भी। राम लोकतंत्री विचारणा के जन हैं। वे लोकहित के लिए अपनी व्यक्तिगत समस्या, किन्तु सबसे प्रिय पत्नी को भी छोड़ने को तैयार हैं। (गोदरे 2007:99)

नरेश मेहता ने युद्ध की समस्या को नये आयामों तथा सन्दर्भों से जोड़ा है। उन्होंने युद्ध जैसी सार्वभौमिक समस्या को राम के साथ सम्पृक्त करके चारों ओर के संशय, अविश्वास, कुण्ठा आदि के दूरीकरण का प्रायास किया है। इसीलिए कवि को राम का अलौकिक रूप नहीं दिखा। उनके लिए तो राम आधुनिक युगीन समस्याओं से पीड़ित संशयी आम मनुष्य हैं। राम युद्ध नहीं चाहते पर कई बार मनुष्य को न चाहकर भी समष्टि के लिए कार्य करने पड़ते हैं-

मैं निर्णय हूँ सबका, अपना नहीं
क्योंकि मैं अब निर्णय हूँ, व्यक्ति नहीं ।(मेहता 2012:28)

मानव-कल्याण की कामना :

आधुनिक काव्य में राम के मानव-कल्याणकामी स्वरूप का भी उद्घाटन हुआ है । युद्ध से होनेवाले नाश तथा उसकी विभीषिका के बारे में राम जानते हैं । वे ज्ञात हैं कि युद्ध से शांति तथा मानवीय मूल्यों की स्थापना नहीं हो सकती । ऐसी विजय से प्राप्त सीता भी उन्हें स्वीकार्य नहीं । 'संशय की एक रात' में राम का मानव-कल्याणकामी स्वरूप दर्शनीय बन पड़ा है-

एसा युद्ध
ऐसी विजय
ऐसी प्राप्ति-
सब मिथ्यात्व है
नरसंहार के व्यामोह के प्रति
वितृष्णा से भर उठा हूँ । (मेहता 2012:33)

राम स्वयं को कुल के विनाश का कारण मानते हैं। अब वे जन के विनाश का कारण नहीं बनना चाहते-

धनुष, वाण, खड्ग और शिरस्त्राण ।
मुझे एसी जय नहीं चाहिए,
बाणबिद्ध पाखी सा विवश
साम्राज्य नहीं चाहिए,
मानव के रक्त पर पग धरती आती
सीता भी नहीं चाहिए ।
सीता भी नहीं ।
हाय
आज तक मैं निमित्त ही रहा
कुल के विनाश का
लेकिन
अब नहीं बनूँगा कारण
जन के विनाश का । (मेहता 2012:36)

प्रश्नाकुलता :

राम एक आदर्श पुरुष हैं। वे स्वयं समस्त प्रश्नों के उत्तर हैं। पर आधुनिक काव्य में राम सामान्य मानव की तरह प्रश्नाकुल दिखाये गये हैं, जिनके मन में युद्ध के परिणाम के संबंध में, अनिश्चित भविष्य के संबंध में, मानव-कल्याण के संबंध में तथा समकालीन अनेक समस्याओं के संबंध में अनेक प्रश्न उमड़ रहे हैं। राम का मन उन प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए व्याकुल है। इन्हीं प्रश्नों के कारण वे किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पा रहे हैं। प्रश्नों के जाल में वे उलझ चुके हैं। उनके मन में दो प्रमुख प्रश्न उभरते हैं, पहला क्या युद्ध से शांति संभव है? युद्ध की सार्थकता के संबंध में प्रश्नाकुल होकर वे कहते हैं -

मैं सत्य चाहता हूँ
युद्ध से नहीं,
खड्ग से भी नहीं
मानव का मानव से सत्य चाहता हूँ।
क्या यह संभव है ?
क्या यह नहीं है ? (मेहता 2012:35)

राम के मन में उठनेवाला दूसरा प्रश्न यह है कि सीता के उद्धार के लिए किया गया युद्ध सार्वत्रिक है या व्यक्तिगत? राम व्यक्तिगत समस्याओं के चलते युद्ध के ऐतिहासिक कारणो को जन्म देना नहीं चाहते। इसीलिए वे लक्ष्मण से प्रश्न करते हैं -

व्यक्ति का वनवास
परिजन और पुरजन के लिए
अभिशाप क्यों बन जाए ?
व्यक्तिगत मेरी समस्याएँ
क्यों ऐतिहासिक कारणों को जन्म दें ? (मेहता 2012:29)

मौलिक संकल्पना के अधिकारी :

एक ओर जहाँ निराला राम को हताश होते हुए चित्रित करते हैं, वहीं दूसरी ओर उन्होंने शक्ति की मौलिक कल्पना कर राम को विषम परिस्थितियों से लड़कर आगे बढ़ते हुए भी दिखाया है। आधुनिक काव्य में जिस लघु मानव की प्रतिष्ठा की बात कही गयी है, कहीं न कहीं आधुनिक राम उसी लघु मानव का प्रतिनिधित्व करते हैं। राम बार-बार रावण से युद्ध में हारते हैं, ऐसी स्थिति में उनका स्वरूप अवतारी राम का न होकर लघु मानव का हो जाता है। जाम्बवान ने अवसादग्रस्त राम को इस विषम परिस्थिति में शक्ति की मौलिक कल्पना करने का जो उपदेश दिया, उसे राम ने ग्रहण किया और अपनी संकल्पना से युद्ध को आगे बढ़ाया। राम ने जब शक्ति की पूजा करने का निश्चय किया, उसी समय राम की विजय निश्चित होती है। राम के लिए रावण से युद्ध जितना

लगभग असंभव था। राम भी पहले इस बात से शंकित थे; पर बाद में राम ने प्रतिकूल परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने के लिए संघर्ष किया। इसीलिए अंत में जो महाशक्ति रावण के पक्ष में थीं, वहीं महाशक्ति राम को विजय होने का वर देकर उनमें समाहित हो गयीं। अपने निश्चय को पूरा करने के लिए राम इतने दृढ़ हो गये कि पूजा के लिए एक कमल कम होने पर वे अपनी एक आँख देवी के चरणों में चढ़ाने के लिए उद्यत होते हैं-

'यह है उपाय' कह उठे राम ज्यों मंद्रित घन-
कहती थीं माता मुझे सदा राजीव- नयन !
दो नील-कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन ! (निराला 2015:52)

राम के इस स्वरूप से निराला ने युगीन निराश, हताश जनता के मन में आशा की किरण जगायी है। राम के माध्यम से कवि निराला ने आधुनिक युगीन मानव के आत्मसंघर्ष को दिखाया है, जो अपने युगीन समस्याओं से लड़कर विजय प्राप्त कर सकता है।

मानसिक सबलता :

मन मनुष्य की चालिकाशक्ति होता है। हार-जीत मनुष्य के मन के ही भाव हैं। इसीलिए तो कहा जाता है मन के जीते जीत है, मन के हारे हार। मनुष्य अगर कुछ करने का तय कर ले, तो उसे उस कार्य में सफलता अवश्य मिलती है। ठीक उसी प्रकार अगर किसी कार्य को करने से पहले ही कोई हार मान ले तो उसकी हार निश्चित हो जाता है। सामान्य मनुष्य ही नहीं विष्णु के अवतार राम का मन भी एकबार निराशा से ग्रस्त हो गया था; पर फिर भी उनके अन्तर्मन ने हार नहीं मानी। उनका अन्तर्मन बड़ी से बड़ी विपत्ति से लड़कर भी अडिग रहा-

वह एक और मन रहा राम का जो न थका;
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय,
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय,
बुद्धि के दूर्ग पहुँचा विद्युत- गति हतचेतन
राम में जगी स्मृति, हुए सजग पा भाव प्रमण। (निराला 2015:52)

डॉ. नगेन्द्र ने इस सम्बन्ध में लिखा है-

> भौतिक विपत्तियों से कुछ समय के लिए क्लान्त हो जाने पर भी वह साहस नहीं छोड़ता और अंतत अपने आत्मबल के द्वारा सफलकाम हो जाता है। यही कारण है कि ब्राह्म विघ्न-बाधाओं से राम का चेतन मन जहाँ कुछ समय के लिए व्याकुल हो गया था, वहाँ उनके अन्तर्मन ने पराजय स्वीकार नहीं की और शीघ्र ही समाधान प्राप्त कर लिया। (नगेन्द्र 2012:44)

राम की शक्तिपूजा कविता का प्रेरक तत्व ही है मानव मन की अपराजेयता। इसमें कवि ने राम के चरित्र के जरिये मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन की विषम परिस्थितियों के विरुद्ध लड़कर जीतने के जज्बे को दिखाया है। साथ ही प्रस्तुत कविता में सामाजिक स्तर पर विदेशी शासन के खिलाफ़ राष्ट्रशक्ति की जय-पराजय की भी व्यंजना है। प्रस्तुत कविता में राम के माध्यम से आधुनिक युगीन नायक के जीवन का प्रतिफलन दिखाया गया है, जो अनेक युगीन विड़म्बनाओं से झकड़ा हुआ है।

निष्कर्ष :

राम एक सनातन पुरुष हैं, जिनका चरित्र हर युग में अनुकरणीय रहा है। साधारणत: राम संबंधी रचनाओं में राम को जिस रूप में देखा गया है, आधुनिक काव्य में राम के उस स्वरूप में भिन्नता है। आधुनिक हिंदी काव्य में राम अवतारवादी राम न होकर सामान्य मानव हैं, जो युगीन समस्याओं से पीड़ित हैं। रामाख्यानों में राम हमेशा परमशक्तिशाली, शील, सौन्दर्य के प्रतीक आदर्श पुरुष के रूप में परिलक्षित होते हैं; पर आधुनिक हिंदी काव्य में राम के संशयग्रस्त, हताश, द्वन्द्वग्रस्त, प्रश्नाकुल, युद्ध विरोधी, मानव-कल्याणकामी मनोबली और मौलिक संकल्पना के अधिकारी स्वरूपों का चित्रण किया गया है। 'राम की शक्तिपूजा' के राम और 'संशय की एक रात' के राम दोनों आधुनिक युगीन राम होते हुए भी भिन्न हैं। निराला ने जहाँ राम को रावण के विजय से शंकित दिखाया है, वहीं दूसरी ओर नरेश मेहता ने राम को व्यक्तिगत स्वार्थ से प्रेरित होकर जन-विनाश का विरोध करते हुए दिखाया है। आधुनिक युगीन काव्य में राम लघु मानव का प्रतिनिधित्व करते हुए चित्रित हुए हैं। इस स्वरूप में भी राम सामान्य जन का प्रतिनिधित्व करते हुए परिलक्षित होते हैं।

ग्रंथ-सूची :

नगेंद्र. राम की शक्तिपूजा.नयी दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस,2012.

नगेंद्र. हिन्दी साहित्य का इतिहास. नयी दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस,2012

निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी.अपरा. नयी दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2015.

मेहता, श्रीनरेश.संशय की एक रात. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2012.

गोदरे विनोद.आधुनिक प्रबन्ध काव्य संवेदना के धरातल.द्वितीय.वाणी प्रकाशन: नयी दिल्ली,2007

सिन्हा,विद्या,संपा. नई कविता:निराला,अज्ञेय और मुक्तिबोध.द्वितीय.नयी दिल्ली:वाणी प्रकाशन, 2007

संपर्क-सूत्र:
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
नगाँव महाविद्यालय(अटोनोमॉस)
ई-मेइल: pujabaruah7274@gmail.com